Unit ④ ①
B.A. (Hons) Part-②
Psychological-Research
Paper-III
By - Dr. Ramendra Kr. Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon

असहभागी निरीक्षण
Non-Participant observation

मनोवैज्ञानिक-शोध में प्रेक्षण प्रदत्त-संकलन की एक प्रमुख स्रोत है। इस संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि "मानव के व्यवहारों तथा कार्यों का जब इन्द्रियों के माध्यम से अर्थात अनुभवसिद्ध (Empirical) प्रत्यक्षीकरण कर लिया जाता है तो इसे अवलोकन अथवा प्रेक्षण कहा जाता है। मोसर महोदय ने प्रेक्षण को अनुसंधान की एक शास्त्रीय विधि कहा है। प्रेक्षण मूलतः दो प्रकार का होता है। प्रेक्षण के दूसरे प्रकार को असहभागी निरीक्षण (Non-Participant observation) कहा जाता है।

असहभागी निरीक्षण भी अनियंत्रित निरीक्षण का एक प्रकार है। असहभागी निरीक्षण में शोधकर्ता को न तो अध्ययन की जानेवाले समूह का सदस्य बनना पड़ता है और न तो उस समूह के क्रियाकलापों एवं व्यवहारों में भागीदारी ही करनी पड़ती है। वह मात्र एक शोधकर्ता की हैसियत से उनके व्यवहारों का अध्ययन करेगा। इस प्रारुप के माध्यम से शोधकर्ता विशेष अवसरों जैसे- शादी-ब्याह, त्योहार, धार्मिक -समारोह, जन्म दिन, मृत्यु आदि के अवसर पर होने वाले व्यवहारों (कार्यकलापों) का दूर से निरीक्षण कर लेता है और किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है। कुछ अन्य उदाहरण जैसे किसी-किसी आदिम जनजातियों में स्त्रियाँ अधिक सक्रिय होती हैं, रोटी अर्जित करने वाली कामकाजी होती हैं और पुरुष घर में पड़े रहते हैं या बच्चों को पालने वाले निकम्मे होते हैं। मुरिया जनजाति के

"It is a study of social situation from the outside." (P.V. Young)

जनजातियों की प्रचलित "घोटूल" प्रथा की जानकारी असहभागी निरीक्षण के उदाहरण है। JOHADA के अनुसार :-

"जब अनुसंधानकर्ता केवल एक वैज्ञानिक के रूप में तटस्थ भाव से निरीक्षण करता है तो उसे असहभागी निरीक्षण कहते हैं।" (When the observation is made in a dettached way by the researcher it is called Non-Participant observation.")

MERITS OF NON-PARTICIPENT OBSERVATION

प्रेक्षण के इस प्रारूप की अपनी कुछ गुण हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

(i) निष्पक्ष अध्ययन की संभावना :- इस विधि से निरीक्षण करने में शोधकर्ता को समूह के सदस्यों के साथ भागीदारी करना आवश्यक नहीं है। अतः कम समय में निरीक्षणकर्ता यथार्थ तथा स्वाभाविक सूचनाएँ संग्रहित कर लेने में सक्षम हो जाता है।

(ii) जोखिम का अभाव :- सहभागी निरीक्षण की तुलना में अध्ययनकर्ता को कम खतरों का सामना करना पड़ता है क्योंकि इसमें समूह की भागीदारी की आवश्यकता नहीं है। यह शोधकर्ता अपने शोध के लिहाज से सूचनाएँ संकलित करने के लिये स्वतंत्र होता है।

(iii) वस्तुनिष्ठ निरीक्षण :- यहाँ अध्ययनकर्ता एक वैज्ञानिक की तटस्थ भूमिका में होता है। उसका समूह के साथ कोई सांवेगिक लगाव नहीं होता है जिससे पक्षपात होने की संभावना नहीं होती है।

इस प्रकार प्रेक्षण का यह प्रारूप वस्तुनिष्ठ अध्ययन में सफल हो जाता है।

(iv) पक्षपात का अभाव :- इस विधि से सूचना-संग्रह में पक्षपात की कम संभावनायें रह जाती हैं क्योंकि शोधकर्ता अपनी तरफ से कोई जोड़-घटाव नहीं करता है। यह पूर्वाग्रहरहित अध्ययन प्रणाली है इसके चलते निष्पक्ष अध्ययन हो जाता है जो इसकी विश्वसनीयता के प्रतिशत को बढ़ा देता है।

(v) वास्तविक सूचनाओं का संकलन संभव :- इस प्रारूप के माध्यम से अध्ययनकर्ता तटस्थ होकर अध्ययन करता है। समूह से कोई लगाव नहीं रखता है, जो सूचनाएँ मिलती हैं उसे बगैर लाग लपेट के प्रस्तुत करता है।

(vi) प्रारंभिक स्तर पर अध्ययन :- इस प्रणाली से सूचनाओं का संकलन प्रारंभिक स्तर पर हो जाता है। सूचना संग्रह की प्राथमिक स्रोत माना जाता है। अतः सरलता से अध्ययन सामग्रियाँ मिल जाती हैं।

सीमाएँ
Limitations of Non-Particapant-observation :-

इस प्रारूप की कुछ सीमाएँ हैं, जो इसको पूरक पद्धति ही बनाकर रख देती हैं। प्रमुख सीमाएँ निम्न हैं :-

(i) सतही अध्ययन :- इस विधि का एक प्रमुख दोष यह है कि इससे प्राप्त सूचनाएँ सतही स्तर की होती हैं। बाहरी क्रियाकलापों को देखकर सूक्ष्म अध्ययन संभव नहीं है। गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन Participant observation इस विधि की तुलना में अधिक कारगर और वैज्ञानिक है।

(ii) निरीक्षणकर्ता का व्यक्तिगत दृष्टिकोण का प्रभाव :- यह एक गंभीर दोष है। इसमें निरीक्षणकर्ता अपने वैयक्तिक प्रभावों से मुक्त नहीं हो पाता है, अपने नजरिये ~~से~~ से व्यवहारों का अध्ययन करता है जो पूर्वाग्रह से ग्रस्त भी हो सकता है।

(iii) ~~कु~~ अस्वभाविकता (Unnaturality) :-

इस प्रारूप से सूचना-संग्रह करने पर भी जब समूह विशेष के सदस्यों को यह ज्ञात हो जाता है कि उनके संदर्भ में सूचनाएँ संग्रहित की जा रही है तो उसके व्यवहारों में अस्वभाविकताएँ आ जाती है। ऐसी हालत में वे प्रायः कृत्रिम व्यवहार प्रकट करने लगते है। इससे दोषपूर्ण तथ्यों की संग्रह की संभावनायें बढ़ जाती है। इस विधि की यह एक सीमा है।

(iv) पूर्णतः असहभागिता संभव नहीं होता :—

कुछ मनोवैज्ञानिकों की यह मान्यताएँ हैं, कि पूर्णतः असहभागिता की बात बेमानी है। पूर्णतः असहभागी रहकर समूह विशेष की कार्यकलापों का अध्ययन करना संभव नहीं होता है। ~~श्री~~ गुड एवं हैट के शब्दों में :-

"As the Student can understand Purely Non-Participant observation is defficult."

उपर्युक्त गुण एवं दोषों का मूल्यांकन करते पर हम पाते हैं कि तथ्यसंग्रह के दृष्टिकोण से Non-Participant observation एक प्राथमिक स्रोत है। इसकी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं पर दोषरहित भी नहीं है। इसी कारण इसे एक पूरक विधि की दर्जा ही प्राप्त है। जहाँ इसकी सीमायें (Limitations) बाधा बनती है वहाँ प्रेक्षण

की अन्य प्रारूपों का प्रयोग करना उचित है। अतः इसे एक पूरक विधि के रूप में ही इस्तेमाल करना चाहिए।

R.K. Singh
25.04.2020
Dr. Ramendra Kr. Singh
Deptt of Psychology
D.K. College,
Dumraon
(Buxar)